दिव्य लीलामृत

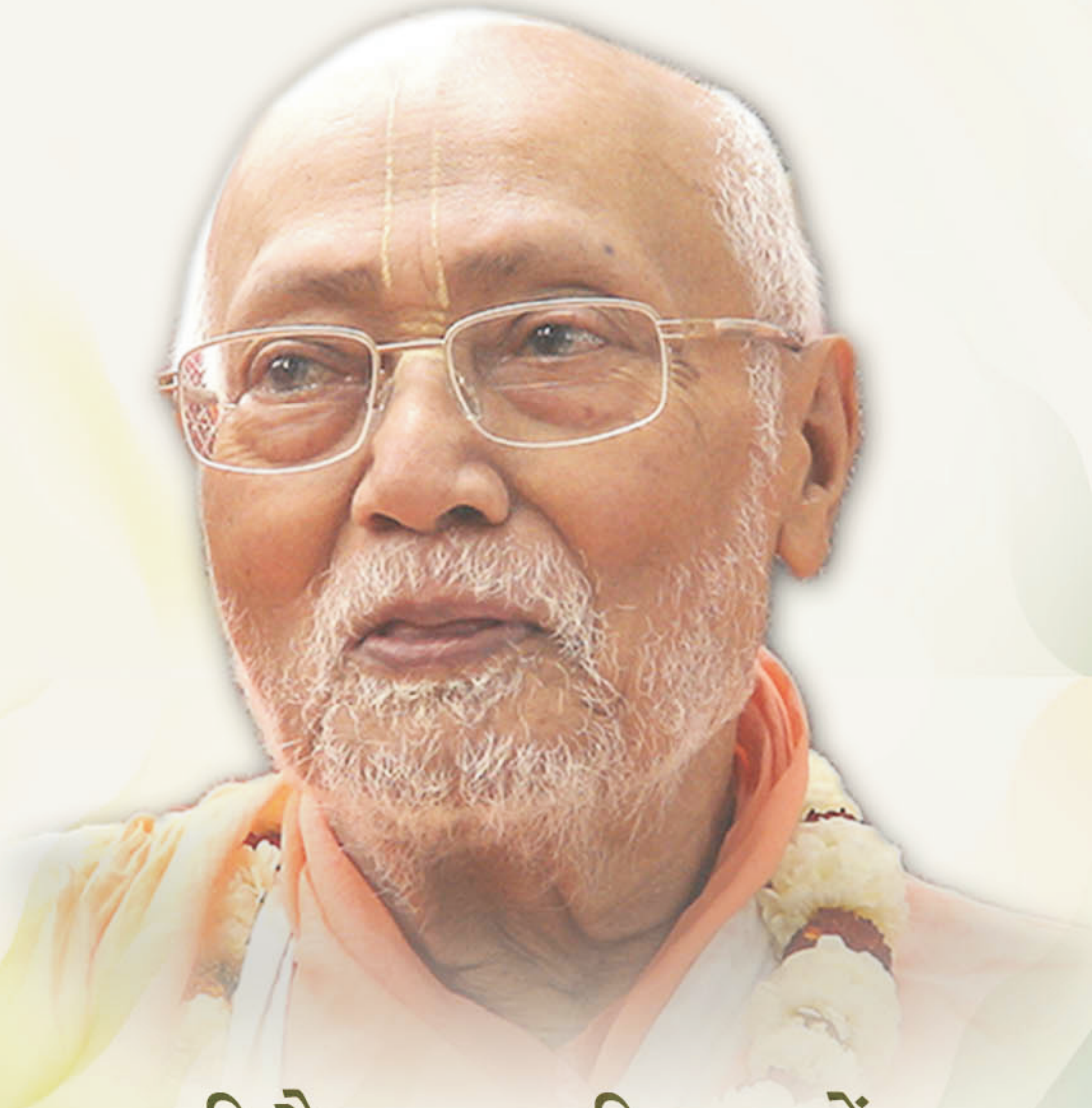

श्रीचैतन्य लीला में उनकी पूर्ण तन्मयता

श्रीश्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज जी

SGD

"श्रील गुरुदेव ने उस कागज़ पर प्रस्तुत विकल्पों में 'चैतन्य' के साथ जुड़े कोई भी शब्द पर ध्यान ही नहीं दिया, या यदि दिया भी हो तो उन्होंने उस चिन्मय शब्द के साथ कोई भी भौतिक शब्द को जोड़ने की स्वीकृति नहीं दी।"

श्रील गुरुदेव

SGD

"बाह्य दृष्टि से वे चाहे कोई भी कार्य करें, किन्तु हृदय की गहराई में वे निरंतर महाप्रभु की दिव्य लीलाओं का आस्वादन कर रहे थे। उनके ये भाव कुछ अवसरों पर गोपन नहीं रह पाते थे।"

श्रीलगुरुदेव

SGD

29 मई 2012 को पंजाब से एक भक्त कोलकाता आए। उन्होंने श्रील गुरुदेव को बताया कि उनका पुत्र एक नया व्यवसाय प्रारम्भ करने जा रहा है, और श्रील गुरुदेव से उन्होंने अनुरोध किया कि वे उनके पुत्र की नई दुकान का नामकरण करें। उन्होंने एक कागज़ पर दस से अधिक विकल्प लिखकर श्रील गुरुदेव को दिए, जैसे कि, “Chaitanya Decorators’, ‘Chaitanya Interiors’, ‘Chaitanya

Curtains’, इत्यादि। उन्होंने श्रील गुरुदेव से उनकी दुकान के लिए उन नामों में से किसी एक नाम को चुनने अथवा अपनी इच्छा के अनुसार अन्य कोई नाम देने के लिए प्रार्थना की।

श्रील गुरुदेव ने उनसे कहा, “क्या यह पन्ना में अपने पास थोड़ी देर रख सकता हूँ? अंग्रेजी में भक्ति संबंधित अच्छे-अच्छे शब्द हैं। मैं उचित शब्द ढूंढने के बाद इसे आपको वापस कर दूँगा।” उन्हें वह पन्ना देकर हम दोनों उनकी भजन कुटीर से बाहर

आ गए। लगभग 15 मिनट के बाद उन्होंने मुझे अपनी भजन कुटीर में बुलाकर उनके द्वारा चुने गए नाम दिखाए। उन्होंने भक्त के द्वारा दिए गए पन्ने पर पूर्व-प्रत्यय 'Chaitany' के साथ 'Devotional Practice' (भजन क्रियाएं) और 'Charitamrit' जैसे कुछ शब्द लिखे थे। उन्होंने उनमें से 'Chaitanya Charitamrita' के ऊपर बार-बार लिखकर उन अक्षरों को मोटा (bold) कर दिया था।

मैंने जो देखा उसे समझने में

मुझे थोड़ा समय लगा। मेरी समझ के अनुसार, श्रील गुरुदेव ने उस कागज़ पर प्रस्तुत विकल्पों में 'चैतन्य' के साथ जुड़े कोई भी शब्द पर ध्यान ही नहीं दिया, या यदि दिया भी हो तो उन्होंने उस चिन्मय शब्द के साथ कोई भी भौतिक शब्द को जोड़ने की स्वीकृति नहीं दी। उन्होंने 'चैतन्य चरितामृत' को विशेष रूप से मोटे अक्षरों में लिखवा क्योंकि संभवत: उनकी दृष्टि से 'चैतन्य' के साथ 'चरितामृत' ही उचित एवं सर्वोत्तम शब्द है।

सर्वश्रेष्ठ नाम प्रदान करने की अलौकिक प्रसन्नता से श्रील गुरुदेव का सुरम्य मुखमण्डल उज्ज्वलित था, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। उन्होंने मेरी ओर देखा और पूछा कि क्या उनके द्वारा चुना हुआ नाम अच्छा है या नहीं? मैंने यूँ ही कह दिया कि यह नाम अच्छा है। उन्होंने मुझसे फिर पूछा कि क्या मुझे वास्तव में वह नाम अच्छा लगा? कदाचित वे मेरे मात्र 'अच्छा' उत्तर से या तो जिस प्रकार से मैंने उत्तर दिया, उससे संतुष्ट नहीं थे। मैं उनके

मुखारविंद पर एक अनोखा उल्लास देख पा रहा था। चैतन्य लीला में उनकी तीव्र तन्मयता को देखकर और यह सोचते हुए कि मैं एक ऐसे व्यक्ति के पास खड़ा हूँ जो महाप्रभु के अन्तरंग पार्षद हैं, मेरा हृदय द्रवित हो गया और मेरी आँखें नम हो गईं। मैंने अपने आपको थोड़ा स्थिर किया और उन्हें उत्तर दिया, "जो नाम आपने चुना वह सर्वोत्तम है।" जैसे ही मैंने यह कहा उनका मुखारविंद और भी अधिक प्रफुल्लित हो गया। उन्होंने मुझसे फिर पूछा, "क्या वह भक्त को यह नाम अच्छा लगेगा?" यद्यपि

इसका उत्तर मैं नहीं जानता था, तब भी उनकी प्रसन्नता को बढ़ाने के लिए मैंने दृढ़ता से कहा, "पृथ्वी पर ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसे यह नाम अच्छा नहीं लगेगा।" यह सुनकर उनके चन्द्रवदन का सौंदर्य अलौकिक मृदुमन्द-हास्य से अलंकृत हो गया।

मैं समझता हूँ कि श्रील गुरुदेव को उनके द्वारा चुने गए नाम (चैतन्य चरितामृत) के सर्वश्रेष्ठ होने के बारे में मेरे से पुष्टि की आवश्यकता नहीं थी, और वास्तव में, वे जो कुछ भी

करते हैं उसके लिए मेरे जैसे बद्ध जीव की पुष्टि या अनुमोदन की कोई आवश्यकता ही नहीं होती। फिर भी उनकी यह लीला—मुझे बार-बार पूछना और अंत में मेरे उत्तर से प्रसन्न होना—ने मुझे ये सन्देश दृढ़ता से दिया कि श्रीचैतन्य चरितामृत (श्रीचैतन्य महाप्रभु की लीला-सुधा) सर्वोपरि है।

श्रील गुरुदेव के आदेश पर मैं उन भक्त को बुलाने के लिए गया। भक्त के साथ श्रील गुरुदेव की भजन कुटीर की ओर जाते समय मैंने श्रील गुरुदेव के द्वारा

दिया गया नाम उन्हें बताया और अनुरोध किया, “श्रील गुरुदेव ने हमें ‘चैतन्य’ के साथ जुड़ने वाला सर्वोत्तम शब्द बताया है। वे कदाचित हमें बताना चाहते हैं कि महाप्रभु की अमृतमय लीलाओं (श्रीचैतन्य चरितामृत) के श्रवण के अतिरिक्त अन्य सब कार्य निरर्थक हैं। भले ही आप उनसे कोई और नाम की अपेक्षा कर रहे हों, तब भी कृपया आप उनसे कहिए कि आपको उनके द्वारा दिया हुआ नाम अच्छा लगा, क्योंकि वैसे भी आप अपने पुत्र

की दुकान के लिए उनसे कोई जागतिक नाम प्राप्त नहीं कर पाएंगे।” उन्होंने कहा कि श्रील गुरुदेव जो भी नाम दें वह उनके शिरोधार्य है।

श्रील गुरुदेव ने अपनी भजन कुटीर में बहुत प्रसन्नता से भक्त का स्वागत किया और उनको वह पन्ना दिखाया जिस पर दुकान के नाम के लिए विकल्प लिखे हुए थे। साथ में उन्होंने अपने द्वारा लिखा हुआ नाम भी उनको दिखाया और उनसे पूछा, “क्या आपने यह देखा? क्या यह नाम

ठीक है?”

भक्त ने उत्तर दिया, “हाँ गुरु महाराज, यह अच्छा है।”

श्रील गुरुदेव ने एक बार और सुनिश्चित करने के लिए उनसे पूछा, “क्या आपको अच्छा लगा?” उन्होंने ‘हाँ’ का संकेत दिया। श्रील गुरुदेव ने उनको वह पन्ना वापस दे दिया और वे, उन्हें प्रणाम करके भजन कुटीर से बाहर आ गए।

इस लीला से हम यह अनुभव कर सकते हैं कि श्रीचैतन्य

महाप्रभु की लीलाओं के प्रति श्रील गुरुदेव का लगाव कितना गहरा था। इन दिनों में उनकी प्रत्येक गतिविधि से उनके अप्राकृत हृदय के दिव्य भाव धीरे-धीरे प्रकट हो रहे थे। बाह्य दृष्टि से वे चाहे कोई भी कार्य करें, किन्तु हृदय की गहराई में वे निरंतर महाप्रभु की दिव्य लीलाओं का आस्वादन कर रहे थे। उनके ये भाव कुछ अवसरों पर गोपन नहीं रह पाते थे।

Play Store

SrilaGurudeva